Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

Original Article

प्राचीन भारत में भूगोल की अवधारणा

आकांक्षा मिश्रा
शोध छात्रा, भूगोल विभाग उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज, वाराणसी
Email: akankshamishra@1356gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171029
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 10
Pp. 130-133
October. 2025
Submitted: 19 Sept. 2025
Revised: 29 Sept. 2025
Accepted: 14 Oct. 2025
Published: 31 Oct. 2025

सारांश

प्राचीन भारत का भूगोल अत्यंत समृद्ध, बहुआयामी और सांस्कृतिक रूप में से जुड़ा हुआ था। यह अवधारणा केवल भूमि, जल, पर्वत, नदियों और मौसम तक सीमित न होकर; यह मानव जीवन, धर्म, दर्शन, राजनीतिक संगठन, कृषि व्यवस्था, पर्यावरणीय संतुलन और आर्थिक संरचना से भी जुड़ा था। जैसे आज के भूगोल स्थानिक विश्लेषण, मानचित्रण और पर्यावरणीय अंतः क्रिया पर जोर देते है, वैसे ही प्राचीन भारतीय भूगोल भी लोगों की आवश्यकताओं जीवन शैली और धार्मिक विचारों के अनुरूप विकसित हुआ था। भूगोल का स्पष्ट उल्लेख वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, पुरणों जैन–बौद्ध ग्रंथो और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है। भारत की प्राचीन भौगोलिक सीमा का परिचय ऋग्वेद में सप्तसिन्धु क्षेत्र में मिलता है, जिसमें सिंधु, सरस्वती, विपाशा, शतद्रु और अन्य नदियाँ भी शामिल थी। इन नदियों को धार्मिक सांस्कृतिक और जीवन दायिनी तत्व के रूप में देखा गया न कि सिर्फ जल स्त्रोतों के रूप में, इसी प्रकार विभिन्न देवाताओं को भी दिखाओं का नाम दिया गया : पूर्व (इन्द्र), पश्चिम (वरूण), उत्तर (कुबेर), और दक्षिण (यम)। यह दिशा–ज्ञान न केवल आध्यात्मिक था, बल्कि खगोलशास्त्र, स्थापत्यशास्त्र और व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी लाभकारी था। पुराणों में सप्तदीप की अवधारणा भूगोल को ब्रह्मांडीय संरचना से जोड़ता है। भारत वर्ष का जम्बूदीप पृथ्वी का केन्द्र था। सुमेरू पर्वत को वैश्विक धुरी एवं ध्रुव बिंदु के रूप में परिलक्षित किया गया है। सात द्वीपों के बीच अलग–अलग सागरों को कल्पना की गयी है, जैसे इक्षुरस, लवण, घृत, दधि यह केवल प्रतीत्कात्मक नहीं है बल्कि उस काल को भौगोलिक कल्पना के प्रसार को दर्शाती है। भारत वर्ष को 'कर्म भूमि' को संज्ञा दी गयी है, जहाँ मोक्ष संभव है, जबकि अन्य भू–भाग को 'भोगभूमि' के रूप में माना गया है। भूगोल को सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ने का काग्र रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य करते है। रामायाण में मिथिला, अयोध्या, दंडकारव्य, किष्किन्धा और लंका जैसे स्थानो का वर्णन एक विस्तृत स्थालाकृतिक ज्ञान को दर्शाता है। महाभारत में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक विभिन्न राज्यो, नगरों और जातियों का विवरण मिलता है, जिससे एक अखण्ड भारतवर्ष की राजनीतिक और सांस्कृतिक एकता परिलक्षित होती है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भूगोल को राज व्यवस्था और आर्थिक नियोजन का आधार माना गया है। नगरों की रचना, सीमाओं की सुरक्षा, संसाधनो का वितरण, खनिजों का प्रयोग, वनों का संरक्षण और कृषि भूमि का वर्गीकरण भूगोल के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करते हैं। चाणक्य ने 'मडल सिद्धान्त' के माध्यम से भू–राजनीतिक संरचना का रूपांकन किया, जिसमें पड़ोसी राज्यों, मैत्री राज्यों और शत्रु राज्यों का स्थानिक विश्लेषण प्रस्तुत है। बौद्ध और जैन परंपराओं में भूगोल को धार्मिक यात्रा, साधना और तीर्थाटन से जोड़ा गया। बौद्ध ग्रथों में वैशाली, राजगृह, श्रावस्ती, कपिलवस्तु जैसे स्थलों का उल्लेख है। जैन ग्रन्थों में जम्बूद्वीप, मेरू पर्वत और सिद्धशिला जैसी अवधारणाएँ आध्यात्मिक भूगोल का परिचय कराती है। जैन विश्वचित्रों में प्रदर्शित मानचित्र प्राचीन भारतीय भूगोल की दृष्टि और कल्पना को साकार रूप प्रदान करता है। वास्तुशास्त्र में दिशाओं का उपयोग, भूमि के ढाल, सूर्य की स्थिति, जल निकास, और संरचना नियोजन में भूगोल का सूक्ष्म प्रयोग हुआ है। नगर नियोजन, मंदिन निर्माण, सिंचाई तंत्र, तालाबों को स्थिति आदि विषय प्राचीन भारतीय वास्तुविदों को भौगोलिक सूझबूझ का परिचायक है। इस प्रका प्राचीन भारत में भूगोल एक विज्ञान नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति, राज व्यवस्था, कृषि, स्थापत्य और दर्शन का अध्ययन था। यह जीवन का एक अभिन्न अंग था, जिसमें मनुष्य औश्र प्रकृति के सामंजस्य को अवधारणा अंतर्निहित थी।

विशिष्ट शब्द :– *प्राचीन भूगोल, सांस्कृतिक,ऐतिहासिक दृष्टिकोण*

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
आकांक्षा मिश्रा , शोध छात्रा, भूगोल विभाग उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज, वाराणसी

How to cite this article:
मिश्रा, .आकांक्षा . (2025). प्राचीन भारत में भूगोल की अवधारणा. Journal of Research and Development, 17(10), 130–133. https://doi.org/10.5281/zenodo.17639064

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17639064
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

प्रस्तावना

प्राचनी भारतीय भूगोल धर्म व ज्ञान पर आधारित था। धार्मिक अभिलेखों के अतिरिक्त यात्रियों द्वारा किए गए वर्णन विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जानकारी की स्त्रोत है। प्राचीन भारतीय विद्वानों को ब्रह्माण्ड विज्ञान और विश्व रचना के बारे में सही जानकारी थी। आर्यभट्ट, वरामिहिर, ब्रह्मगुप्त, भाण्करावार्य, उत्पल्ल, विजय नंदी आदि विद्वानों ने मानचित्र कला के विकास में योगदान दिया।भूगोल शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 'सूर्य सिद्धान्त' में किया गया जब कि पुराणों में भूगोल एवं ज्योतिष चक्र के बीच अंतर स्पष्ट किया गया है। प्राचीन भारतीय भूगोलशास्त्रियों ने 9 ग्रहों–सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू और केतु का वर्णन किया है। बुद्ध के लिए हरा रंगा का, शुक्र के लिए सफेद रंग का, मंगल को लाल, वृहस्पति को पीला एंव शनि को काला रंग का बताया गया है। प्राचीन भारतीय भू केंद्रिक सिद्धान्त में विश्वास रखते है।'पृथ्वी' शब्द का प्रयोग वेद एवं पुराणों मे कई बार किया गया है। ऐतरेय ब्राह्माड में पृथ्वी को मंडलाकार बताया गया है। इसमें कहा गया है कि सूर्य न उदय होता है और न अस्त होता है, यह दिन की समाप्ति पर दूसरी ओर चला जाता है, जिससे रात हो जाती है। पुराणों में अक्षांशो एवं देशान्तरो को जानकारी मिलती है। अक्षांशो के आधार पर पृथ्वी को अनेक प्रदेशों में विभाजित किया गया था। ऋग्वेद में पांच ऋतुओं बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमंत ऋतु का उल्लेख मिलता है। जबकि वाल्मीकि रामायण में 6 ऋतुओं का वर्णन मिलता है जो निम्नलिखित हैः–

ऋतु (Season)		माह (Month)
बसंत (Spring)		मार्च–अप्रैल
ग्रीष्म (Summer)		मई–जून
वर्षा (Rainy)		जुलाई–अगस्त
शरद (Autumn)		सितम्बर–अक्टूबर
हेमंत (Winter)		नवम्बर–दिस्मबर
शिशिर (Sever winter)		जनवरी–फरवरी

पौराणिक युग में भारतीय विद्वान ने विश्व को सात (7) द्वीपो में विभाजित किया था जो निम्न इस प्रकार है।

द्वीप का नाम		**वास्तविक नाम**
जम्बू द्वीप	–	भारतीय उपमहाद्वीप
पालक्ष द्वीप	–	फारस द्वीप
शाल्मली द्वीप	–	वर्तमान सोभाली
कुश द्वीप	–	भूमध्यसागरीय देश
क्रौंच द्वीप	–	यूरोप
शक द्विप	–	थाइलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया
पुष्कर द्वीप	–	पूर्वी चीन, पूर्वी साइबेरिया, जापान

THE POSSIBLE LOCATION OF THE SEVEN DWIPAS ACCORDING TO THE PURANAS

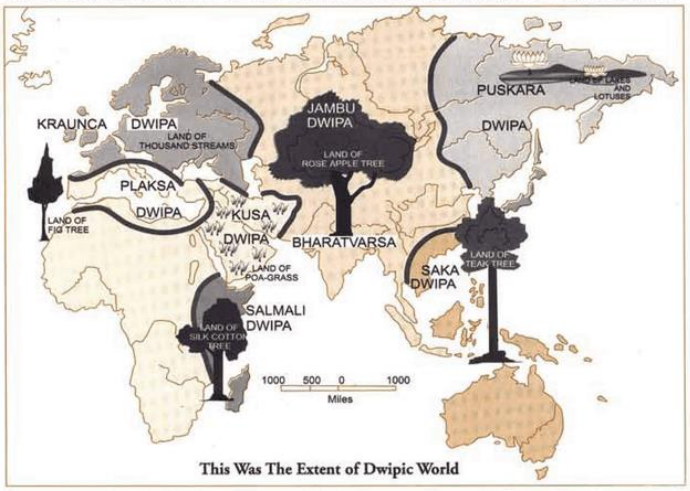

आर्य भट्ट ने पृथ्वी को एक गोलाकार पिण्ड बताया एवं पृथ्वी की परिधि लगभग 24835 मील बताई जो वास्तविकता के काफी निकट है। उन्होंने चन्द्रग्रहण का कारण चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया पड़ना बताया। वराहमिहिर ने परच सिद्धांतिका नामक ग्रन्थ की रचना किया। भास्कराचार्य ने सिद्धान्त शिरोमणि नामक की रचना की, उनका मानना था कि पृथ्वी गोल हैं एवं अपने गुरूत्वाकर्षण के कारण सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित/खींचती करती हैं। इस प्रकार न्यूटन से कई शताब्दी पूर्व ही भारतीयों पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण का सिद्धान्त, सूर्य की स्थिरता, पृथ्वी के अक्षीय एवं कक्षीय भ्रमण के बारे में जानकारी प्राप्त की जा चुकी थी।ऋग्वेद में इस बात का उल्लेख मिलता है कि चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करता है। मास्कराचार्य एवं अन्य

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

भारतीय विद्वनों ने पृथ्वी को 360 अंशों में विभाजित किया था। पुनः प्रत्येक अंश को 60 कला Minute एवं प्रत्येक कला को 60 विकला Seconds में विभाजित किया गया था।

अध्ययन का उद्देश्य :–

शोध पत्र को अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन भारत में भूगोल को अवधारणाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

मुख्य आलेख :– (Main Article)

प्राचीन भारतीय भौगोलिक अवधारणाओं का व्यवस्थित विवरण पुस्तक रूप में उपलब्ध नहीं है, फिर भी हिंदू पौराणिक कथाओं, दर्शन, महाकाव्यों, एवं इतिहास से भौगोलिक जानकारी मिलती है। कालानुक्रमिक रूप से, वैदिक, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैनियों के कार्य और पुराण प्राचीन भारतीय भौगोलिक अवधारणो के मुख्य स्त्रोत है। प्राचीन भारतीय विद्वानों को भारत और उसके आस–पास के देशों की स्थलाकृति, प्राकृतिक भूगोल, वनस्पति, जीव–जन्तु, प्राकृतिक संसाधन, कृषि और अन्य सामाजिक–आर्थिक तिविधियों का सटीक ज्ञान था। ऐतरेय ब्राह्मण में भारत के क्षेत्रीय भेगोल का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करता है। शतपथ ब्राह्मण भूगोल की विभिन्न शाखाओं का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करता है। प्राचीन कालीन भारतीय ज्ञान को संक्षेप में निम्नांकित शीर्षको के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है।

सौर मण्डलीय ज्ञान :–

प्राचीन काल में ही ब्रह्माण्ड विज्ञान के क्षेत्र में भारत में पर्याप्त उन्नति कर ली थी। सूर्य, चन्द्र व पृथ्वी के सम्बन्धों, ऋतु परिवर्तनों, दिवस–रात्रि, उषः मध्याहन अपरान्ह आदि के प्रसंग ऋग्वेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद में, बहुत से मन्त्रों में आते हैं। पृथ्वी आन्तरिक्ष के वर्णन तथा मृगशिरा, कृन्तिका, चित्रा, रेवती आदि सत्ताईस नक्षत्रों के वेदों व ब्रह्माण्ड के विषय में इन ग्रन्थों मे पढ़े जा सकते है। विषुव दिवस का उल्लेख वेदों में अनेक स्थानों पर है। सौर वर्ष, सौर मास आदि की गणनाओं, और सूर्य नक्षत्रों की गणना के आधार पर वैदिक ज्योतिष का प्रतिपादन किया गया। ईसा की पांचवी सदी से सातवी सदी तक भारतीय विद्वानों ने खगोलीय भूगोल में बहुत उन्नति की, इसी काल में आर्यभट्ट वराहमिहिर, बहम्पुत्र, आदि विख्यात गणितज्ञ थे। इनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों में 'सूर्य सिद्धान्त' प्रमुख है।

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में पृथ्वी की उत्पत्ति पर भी प्रकाश डाला गया है। ऋग्वेद के मन्त्रों से अनुमान लगाया गया है कि आर्यो ने पृथ्वी के पिछले रूप की कल्पना की थी, जिसे आज भी स्वीकार किया जाता है। रामायण–महाभारत में भूकंप तथा ज्वालामुखी के प्रसंग मिलते हैं। ''जब शक्तिशाली गज थक कर हिलता है, तब भूचाल आता है।''

पुराणों में महाद्वीपों व पर्वतों की उत्पत्ति विषयक कल्पनाएँ की है– 'पृथ्वी महासागर में एक बृहत नौका के रूप में तैरती है। ब्रह्मा ने पृथ्वी का समतलन किया व उसे सात द्वीपों में विभक्त किया। इससे पृथ्वी के तैरने की वर्तमान संकल्पना किया। इससे पृथ्वी के तैरने की वर्तमान संकल्पना (सियाल के बने महाद्वीप सीमा पर तैरते है) के समकक्ष विचारधारा का अनुमान होता है। पृथ्वी की आयु की कल्पना भी प्राचीन ग्रन्थों में की गई है। 'मनुस्मृति' में उल्लेख है कि पृथ्वी अब तक 1,96,91,03,000 वर्ष पूर्ण कर चुकी है। समकालीन विद्वान भी पृथ्वी की आयु करीब दो अरब मानते है। रामायण में सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण की भी चर्चा है। इसके कारण राहु–केतु बताए गए है। सौर मण्डल के अन्य ग्रहों–मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि की चर्चा भी की गयी है।

वायुमण्डलीय ज्ञान :–

ऋग्वेद के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय के आर्यो को वायुमण्डल के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान था। उन्होंने वर्ष को छः ऋतुओं में विभक्त किया था। मन्त्रों में 48 (48) से 63 (63) प्रकार की पवनों की चर्चा है। वाल्मीकी रामायण में बादलों का वर्णन है। इसमें तीन प्रकार के बादल व सात प्रकार के पवन का उल्लेख है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा के वितरण को समझाया गया है। जो आज के वितरण के अनुकूल है। कृषि तथा वर्षा का सबंध स्थापित करते हुए कौटिल्य ने लिखा है– कुछ ऐसे बादल होते है जो क्रमशः सात दिनों व उससे अधिक दिनों तक वर्षा करते है, जो खेतो को जोतने योग्य बनाते है। कौटिल्य ने वर्षा मापक यन्त्र भी तैयार किया था।

जलमण्डलीय ज्ञान :–

वैदिक मन्त्रों में महासागरों का वर्णन है। सामवेद तथा अथर्ववेद में महासागरो की संख्या चार (4) बताई गई है, परन्तु अन्य वेदों में इनको संख्या सात (7) बताई गई है। सामवेद में महासागरों में जल के उठने का वर्णन मिलता है, जिससे ज्वार–भाटा की कल्पना की जा सकती है। रामायण में कई स्थानों पर ज्वार–भाटा का उल्लेख है, इसका कारण चन्द्रमा को बताया गया है।

स्थलमण्डलीय ज्ञान (सामान्य भौगोलिक वर्णन) :

प्राचीन काल के स्थलमण्डलीय ज्ञान को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :–

(क) भौतिक भूगोल– भौतिक भूगोल विषयक ज्ञान में पर्वतों, नदियों व वनस्पति का वर्णन मिलता है:–

पर्वत :– पुराणों के अनुसार संसार की समस्त पर्वत श्रृंखलाएं पामीर (मेरु) के चारों ओर अवस्थित है। पर्वतों को पांच प्रकारों में विभक्त किया गया है– मध्यपर्वत (मेरु), विषकम्भ पर्वत। जो मेरु के चतुर्दिक विस्तृत है), वर्ष पर्वत (विभिन्न देशों की कुल पर्वत मुख्य पर्वत श्रखलाए) तथा मर्यादा पर्वत (सीमा पर स्थित पर्वत)।

भारत में पर्वतों का पुराणों में विस्तृत वर्णन है। इनमें महेन्द्र (पूर्वी घाट) मलय (पश्चिमी घाट), रिक्ष (मध्य विंध्य) का उत्तरी भाग आदि प्रमुख नदियाँ–वेदों में नदियों के विस्तृत वर्णन है। वेदो व उपनिषदों में अफगान्सितान, पंजाब व गंगा–यमुना

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

क्षेत्र की नदियों का वर्णन है। पुराणों के अनुसार मेरु (पानीर) के दिशाओं में नदियॉ प्रवाहित होती है। दक्षिण की और गंगा, पश्चिम की ओर चक्षु, पूर्व की ओर सीता व उत्तर की ओर भ्रदसोन नदी बहती है। मार्कण्डेय पुराण में भारतीय नदियों का विस्तृत वर्णन है। गंगा की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन के साथ–साथ यमुना, गोदावरी, सिन्धु, कावेरी, कृष्णा व ताम्रपर्णी का विशेष वर्णन है।

वनस्पति :– मार्कण्डेय पुराण में विभिन्न प्रकार की वनस्पति का वर्णन मिलता है। तत्कालीन फसलों का भी वर्णनव शिव पुराण में दुग्ध वृक्ष (रबड़) का प्रसंग है।

(ख) मानव भूगोल विषयक ज्ञान :–

ऋग्वेद में पृथ्वी पर पांच प्रकार के लोगों का वर्णन है। इनमें असुर तथा दास भी सम्मिलित है। वाजसनेयि संहिता में चार वर्णों का उल्लेख है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र। रामायण में अनेक भारतीय आदिम जातियों का वर्णन है। इनमें राक्षस, वानर, निषाद, किन्नर, गन्धर्व, नाग, असुर, देव, आदि जातियां मुख्य है। विदेशी जातियों में शक एवं यवनों को गौर वर्ण की जातिया कहा गया है। महाभारत में भी अनेक जातिया, कहा गया है। महाभारत में भी अनेक जातिया, उनके रूप रंग, विवाह पारिवारिक सम्बन्धो आदि के वर्णन है। मनु के धर्मशास्त्र में आठ प्रकार के विवाह बताए गए हैः ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, असुर, गन्दर्व, पैशाच व राक्षस, इनमें से छः को सामाजिक समर्थन प्राप्त था। कौटिल्य ने भी विवाह पद्धति व स्त्री पुनर्विवाह की चर्चा की है।

(ग)सांस्कृतिक भूगोल विषयक ज्ञान :–

प्राचीन समय से ही कृषि भारतीयों का मुख्य व्यवसाय रहा है। अथर्ववेद में वर्णन है कि कृषि में उन्नत विधियों फसलों का उत्पादन, ऋग्वेद में खेत जोतने का उल्लेख मिला है। पताजलि के महाभाण्य में फसले बोने की विधियों, कृषि क्षेत्रों, बीजों व अनाज भण्डारण का वर्णन है। पाणिनी पंताजलि व मनु ने भूमि का वर्गीकरण भी किया है। बाढ़ से प्रभावित भूमि द्वारा अनुपयोगी भूमि ऊसर, पशुचारण के लिए प्रयुक्त भूमि नोचर व जोतने योग्य भूमि का वर्णन है। पंताजलि ने फसलों के प्रादेशिक वितरण का भी वर्णन किया है। सिंचाई के साधनों पर भी प्रकाश डाला गया है। कुएं व तालाब सिंचाई के प्रमुख साधन थे।

प्राचीन भारत में विभिन्न उद्योग धन्धे भी पर्याप्त भारत में विभिन्न उद्योग धन्धे भी पर्याप्त विकसित अवस्था में थे। बर्तन, वस्त्र निर्माण, सिक्के, आभूषण आदि सम्बन्धी उद्योगों का वर्णन वेदों में है। भवन निर्माण काष्ट शिल्प, मृतिका शिल्प, लौह शिल्प भी इस समय अपनी उन्नति की चरम सीमा पर थे। दिल्ली में कुतुबमीनार के समीप स्थापित जंगरहित लौह स्तम्भ, जो कि गुप्त काल में निर्मित बताया जाता है, भारतीय लौह–शिल्पियों की दक्षता का प्रमाण है।

परिवहन मार्ग भी प्राचीन भारत में अच्छी व्यवस्था थी। ब्रह्माण्ड पुराण में दस प्रकार की सड़कों का वर्णन है। दिशा मार्ग, ग्राम मार्ग, सीमा मार्ग, राज पथ शाखारख्या रथोपरथ्या, उपरथ्या, जंघापथ, मृहान्तपथ तथा धृति मार्ग। विदेशी व्यापार भी प्राचीन काल में भारतीय विशेषता रही है। विष्णु पुराण में कम्बोज के घोड़ों तथा मत्स्य पुराण में नेपाल व्यापारिक मार्गो का उल्लेख है। आधिवास सम्बन्धी ज्ञान भी प्राचीन भारतीय साहित्य से प्राप्त होता है। मोहनजोदड़ों व हड़प्पा की खुदाई से प्राचीन भारतीय नगर नियोजन व भवन निर्माण कला का परिचय मिलता है। मानवीय बस्तियों का वर्गीकरण 'मायामतम' में किया गया है।

(घ) राजनीतिक व प्रादोशिक भूगोल विषयक ज्ञान वैदिक साहित्य में भारतीय जनपद प्रदेशों के वर्णन है। इनमें काशी, कोशल, मगध, पांचाल, विदर्भ, सौराष्ट्र व आन्ध प्रदेश थे।

उपसंहार :–

उपयुक्त विवेचना के बाद हम यह कह सकते है कि प्राचीन भारत में भूगोल की अवधारणा केवल भौगोलिक संरचनाओं तक सीमित नही थी, बल्कि यह सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों से गहराई से जुड़ी थी। वेदों पुराणों, महाकाव्यों (रामायण व महाभारत) तथा विभिन्न स्मृति ग्रंथों में वर्णित स्थान, पवर्त, नदियाँ, समुद्र और जलवायु न केवल भौगोलिक चेतना को दशनि है, बल्कि तत्कालीन समाज की जीवन शैली, आस्था, व्यापार व राज व्यवस्था का भी प्रतिबिंब प्रस्तुत करते है।

प्राचीन भारतीय भूगोल की विशिष्टता यह थी कि इसमें ''देश'' और ''जनपद'' जैसे शब्दों का प्रयोग स्थानिक इकाइयों को व्यक्त करने के लिए किया गया, जब कि ''दिग्विजय'', ''दशदिशाएँ और सप्तद्वीप'' जैसी अवधारणाएँ भूगोल को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयाम देती है। भूगोल को केवल भौतिक सीमाओं से नहीं बल्कि मानव और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों के रूप में देखा गया था। ऋग्वेद से लेकर कौटिल्य के अर्थशास्त्र तक और। वराहमिहिर की वृहत्संहिता तक, भूगोल की अवधारणा निंरतर विकसित हुई।

अतः कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में भूगोल एक सम्रग ज्ञान प्रणाली का हिस्सा था, जो केवल पृथ्वी की रचन का अध्ययन नहीं करता था, बल्कि जीवन के विविध पहलुओं– धर्म, संस्कृति, राजनीति, कृषि, जलवायु और मानव गतिविधियों– को जोड़ता था। यह दृष्टिकोण आधुनिक भूगोल की मानव–केद्रित धाराओं का भी पूर्व संकेतक है।

सन्दर्भ सूची

1. Adhikari, S.(2006) (4thed.) : Fundamentals of Geographical Thoughat, Allahabad, Chaitanya Publication House.
2. Ali S.M., Geography of Puranes.
3. Dixshi, R.D. (1997) Geographical Thought: A contextual History of ideas, New Delhi: Prentice- Hall of India.
4. Husain, M. (1988) (Revised ed.) : Evolutation of Geographical Thought, vaipur, Rawat Publication.
5. Rana, L. (2013) Evolution of Modern Geographical Thinking and Disciplinary Trends in India, AGS (The Association for Geographical studies) Study Material Series, Paper-VIII.